

कर्मा की कहानी



धात्री



धात्री

महिलाओं और बच्चों के लिए एक संसाधन केंद्र

द्वारा प्रकाशित

झारखंड के चतरा आदिवासी महिलाओं का धन्यवाद
निर्मला केरकेट्टा, चतरा

कहानी लेखनः डिंपल प्रकाश
सारस्वत मंदरापु

हिन्दी अनुवादः रेशमी मिंज

प्रलेखनः डिंपल प्रकाश
गायत्री थायप्पा

चित्र और डिज़ाइनः डिंपल प्रकाश

एक बार की बात है, एक राजा था जिसके सात बेटे और एक प्यारी बेटी थी। उनका जीवन आनंदमय से भरा हुआ था, लेकिन तभी अचानक एक विपत्ति आ पड़ी - राज्य में भयंकर अकाल पड़ गया। भोजन, पानी और अन्य आवश्यक संसाधन दुर्लभ हो गए, जिससे लोगों के लिए जीवित रहना मुश्किल हो गया।



काफी सोच-विचार के बाद, राजा ने एक कठिन निर्णय लिया। उसने अपने बेटों को बुलाया और उन्हें अपने संघर्षरत राज्य के लिए पैसे कमाने के लिए काम की तलाश में विदेश जाने का आदेश दिया। एक-एक करके, वे सभी अपने भाग्य की तलाश में निकल पड़े, सिवाय सबसे छोटे बेटे, धर्म, के।

धर्म ने अपने पति और अपनी मातृभूमि के प्रतिग्रहरे प्रेम से प्रेरित होकर घर पर रहना चुना। वह प्रकृति को संजोता था और उससे गहरा आध्यात्मिक जुड़ाव महसूस करता था, वह अपना जीवन प्रकृति के देवी-देवताओं के सम्मान में समर्पति करना चाहता था।



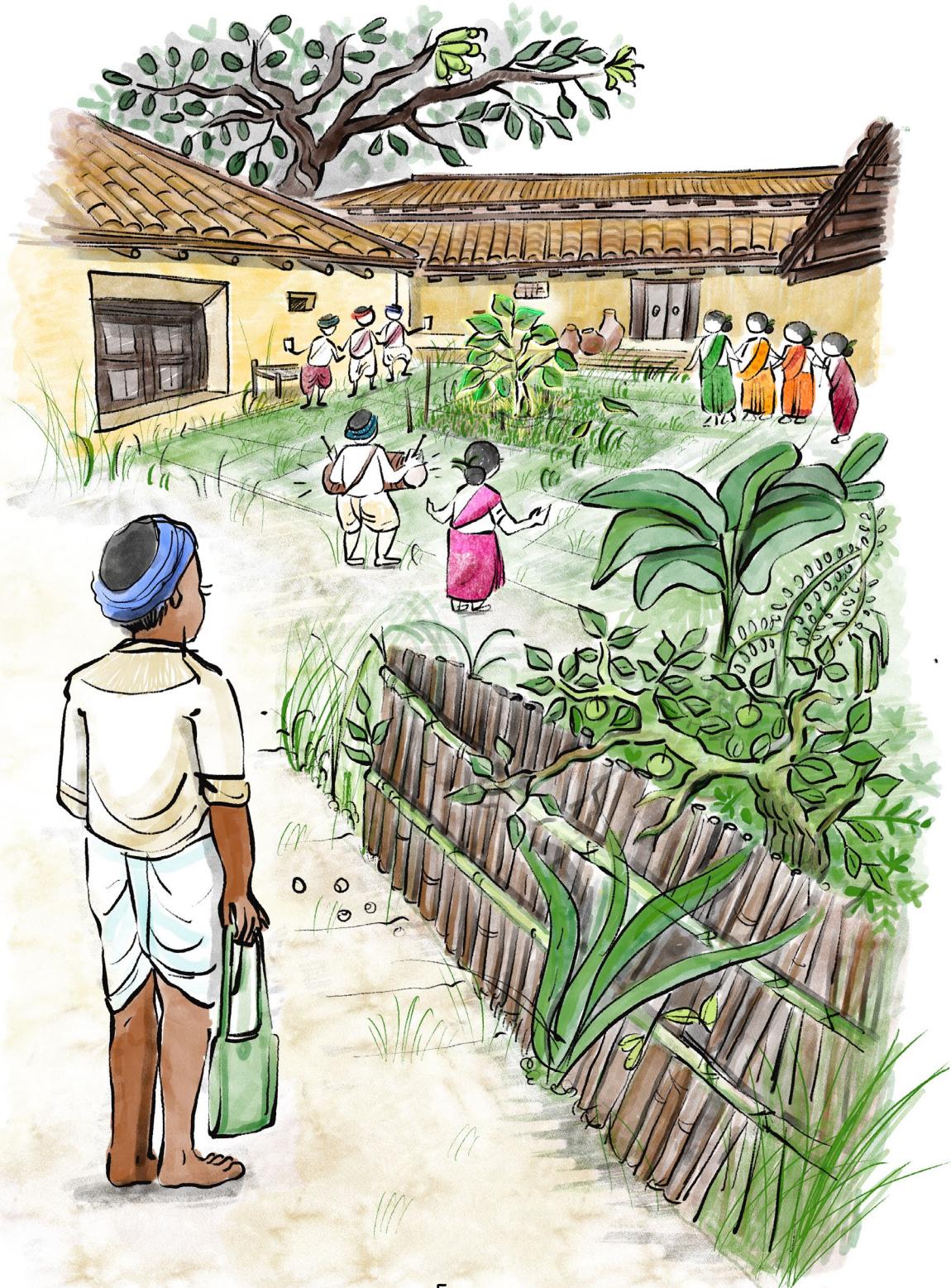
जैसे-जैसे साल बीतते गए, राजा के बेटे अपने-अपने कामों में आगे बढ़ते गए, और हर एक ने खूब धन कमाया। लेकिन कर्मा, बड़ा बेटा, घर और अपने परिवार की कुभ याद आने लगी, वह सबसे मिलने के लिए तरसने लगा। उनसे फिर से मिलने के लिए उत्सुक, उन्होंने सदियों पुराने गांव के रिवाज का पालन किया: दूर देशों से लौटने वाले किसी भी व्यक्ति को अपने माता-पिता या ग्रामीणों को अपनी यात्रा के बारे में पहले से सूचित करना होगा।



एक लंबी और थकाऊ यात्रा के बाद, कर्मा अपने गाँव के प्रवेश द्वार पर पहुँच गया।

उनहोंने ठहर कर, वहीं अपने परिवार के आने का इंतज़ार करने का सोचा ताकी उनहें घर ले जोए।

उन हो ने आस-पास के गाँव वालों से उनके माता-पिता तक उनकी वापसी की खबर पहुंचाने के लिए कहा। भूखे और प्यासे वह बैठे रहे कई दिन, फिर भी, कोई उनहें घर ले जाने नहीं आया। निराश होकर, उन्होंने फैसला लिया कि वह अब और इंतज़ार नहीं कर सकते, और अपने परिवार के घर की ओर खुद ही चले जाएंगे।



जब वह अपने घर पहुंचे, तो एक अप्रत्याशित दृश्य ने उनका स्वागत किया। हर कोई खुशी से आंगन में इकट्ठा हुए, एक पेड़ के चारों ओर सब गा और नाच रहे थे - उनके उत्सव का केंद्र। इस पेड़ को देवता के अवतार के रूप में पूजा जाता है, जो उनके पूर्वजों और प्रकृति के देवताओं के लिए एक जीवित कड़ी थी।

जब कर्मा आंगन के किनारे खड़ा था, तो उसने देखा कि हर कोई उसके बिना मौज-मस्ती में खोए हुए हैं, जश्न मना रहे थे और मौज-मस्ती में मग्न थे। ऐसा लग रहा था मानो वे सब उसके लौटने के बारे में भूल ही गए थे, इस दृश्य को देखकर वह क्रोधित से उबल उठे।

क्रोध में, कर्मा, पवित्र वृक्ष की ओर दौड़े और वृक्ष को उखाड़ कर
उसे बहुत दूर फेंक दिया।



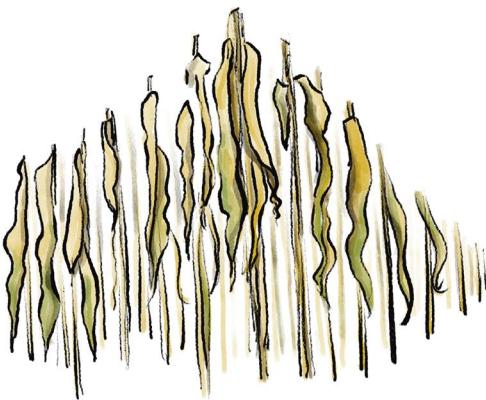
लेकिन उनको अनुमान नहीं था कि उनके इस व्यवहार के घमंभीर परिणाम होंगे।

प्रकृति के देवी देवता (और पूर्वजों की आत्माएँ) उनके अनादर को देखकर निराश और क्रोधित हो उठे । उसी क्षण में, उन्होंने पुरे गांव पर एक शक्तिशाली श्राप दिया ,

“ गाँव में सात वर्षों तक बारिश नहीं होगी, और यह एक भयानक अकाल को झेलेगा । जब तक पेड़ की शाखा को उसके सही स्थान पर वापस नहीं पहुँचाया जाएगा, तब तक दुख और कठिनाइयाँ बनी रहेंगी... ”

देवताओं की आवाज़ गूंजी, जिससे हवा में एक पूर्वाभास की भावना भर गई।

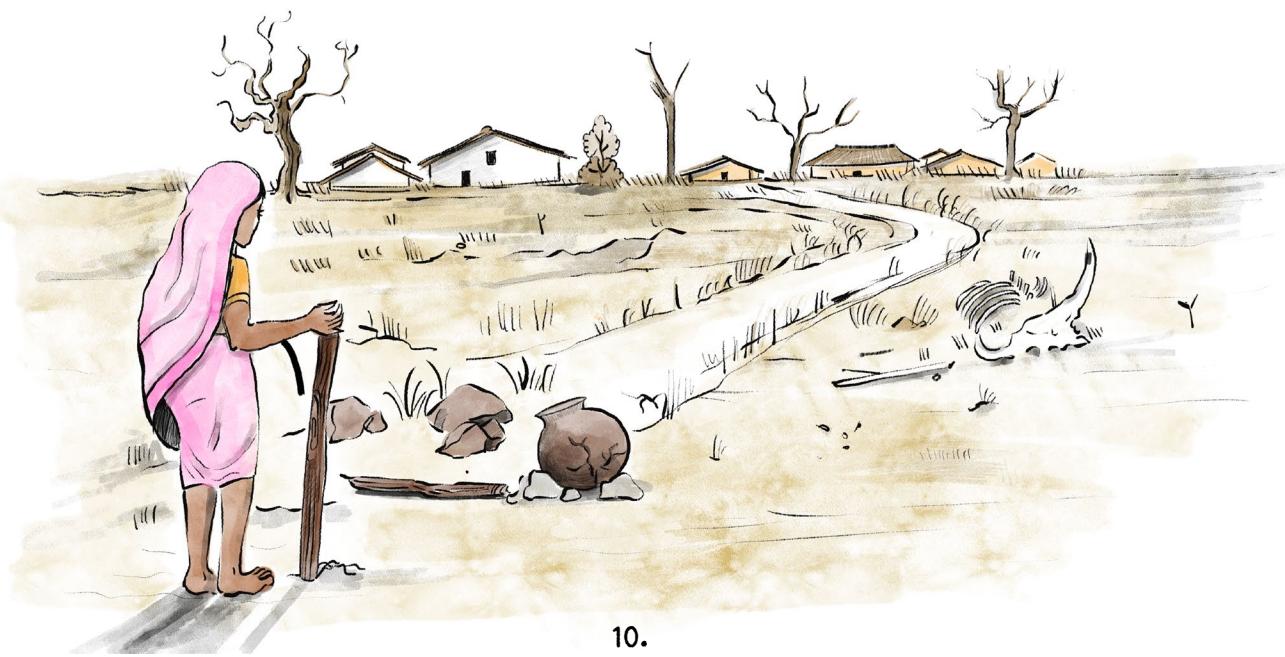




कुछ ही दिनों में पूरा इलाका सूखने लगा - नदियाँ सूख गईं, नहरें धूप में फट गईं और जो नदियाँ कभी जीवन से भरी रहती थीं, वे अब स्थिर पड़ी थीं। पेड़ सूख गए, पौधे मुरझा गए, और हरा-भरा जंगल अपनी पूर्व अवस्था की छाया मात्र रह गया।



जैसे-जैसे दिन महीनों में और महीने सालों में बदलने लगे, इलाका सूखा ही रहा, आसमान से बारिश की एक भी बूँद नहीं गिरी। गाँव में भयंकर अकाल पड़ा, इस के कारण लोग जीवित रहने के लिए संघर्ष कर रहे थे। प्रकृति का नाजुक संतुलन बिगड़ गया, और जो जीवंत जीवन कभी फलता-फूलता था, उसकी जगह निराशा की हवा ने ले ली।





भूख से तड़पते हुए, कम्फी
पानी और भोजन की तलाश
में जंगल-जंगल भटकता
रहा...



हर बार जब वह किसी झिलमिलाते हुए तालाब पर ठोकर खाता और पीने के लिए झुकता, तो पानी उनकी आँखों के सामने बदल जाता, गाढ़ा, खून बन जाता। जो भी भोजन उहें मिलता, वो भी सूखे में बदल जाता

जैसे-जैसे दिन बीतते गए, कर्मा को अपने किए का बोझ और अपने द्वारा किए गए घोर पाप का एहसास होने लगा। उसने प्रकृति के देवताओं को नाराज़ किया था और अपने पूर्वजों का अपमान किया था। उसकी अनैतिकता के परिणाम उसके लिए दर्दनाक रूप से स्पष्ट हो गए - यह दुख, उसका अपना और गाँव का, उसकी लापरवाही का परिणाम था।



क्षमा मांगने और सद्भाव बहाल करने के लिए दृढ़ संकल्पति, कर्मा ने देवताओं को प्रसन्न करने के लिए घोर तपस्या करने का फैसला किया। हालांकि, अंततः यह स्पष्ट हो गया कि उनके प्रयास व्यरुथ थे - देवता अड़गि रहे, और भूमपीड़िति होती रही।





अंत में, चल रहे अकाल से थके हुए ग्रामीणों ने कर्मा से देवताओं से ईमानदारी से माफ़ी मांगने और उनकी मांगों को पूरा करने का आग्रह किया। उन्होंने उसे शाप और आगे आने वाले महत्वपूर्ण कार्य की याद दिलाई। उसे उस पवित्र वृक्ष की शाखा को खोजने की ज़रूरत थी जिसे उहोने उखाड़ था, उसे सात समुद्र पार से वापस लाना था, और जब तक वह फिर से न उग जाए, तब तक उसकी देखभाल करनी थी।

नए उद्देश्य की भावना से
प्रेरित होकर, कर्मा ने अपने
छोटे भाई धर्म की मदद मांगी।
साथ में, उन्होंने शाखा को
खोजने और बिगड़े हुए संतुलन
को बहाल करने के लिए एक
यात्रा शुरू करने का संकल्प
लिया।





आँखों में आशा की चमक
लिए, गाँव के लोग और उनकी
बहन कर्मा और धर्मा को
विदाई देने के लिए एकत्रित
हुए, फिर वह अपने महत्वपूर्ण
खोज पर निकल पड़े।



उनकी यात्रा उन्हें
घने जंगलों और
विशाल समुद्रों से
होकर ले गई।



कई दिनों की खोज के बाद, उन्होंने आखिरकार सूरज की रोशनी में चमकते समुद्र में शाखा को देखा। उन्हें आश्वर्य हुआ कि लहरों के बीच तैरती हुई वही शाखा थी जिसे कर्मा ने उखाड़ दिया था।



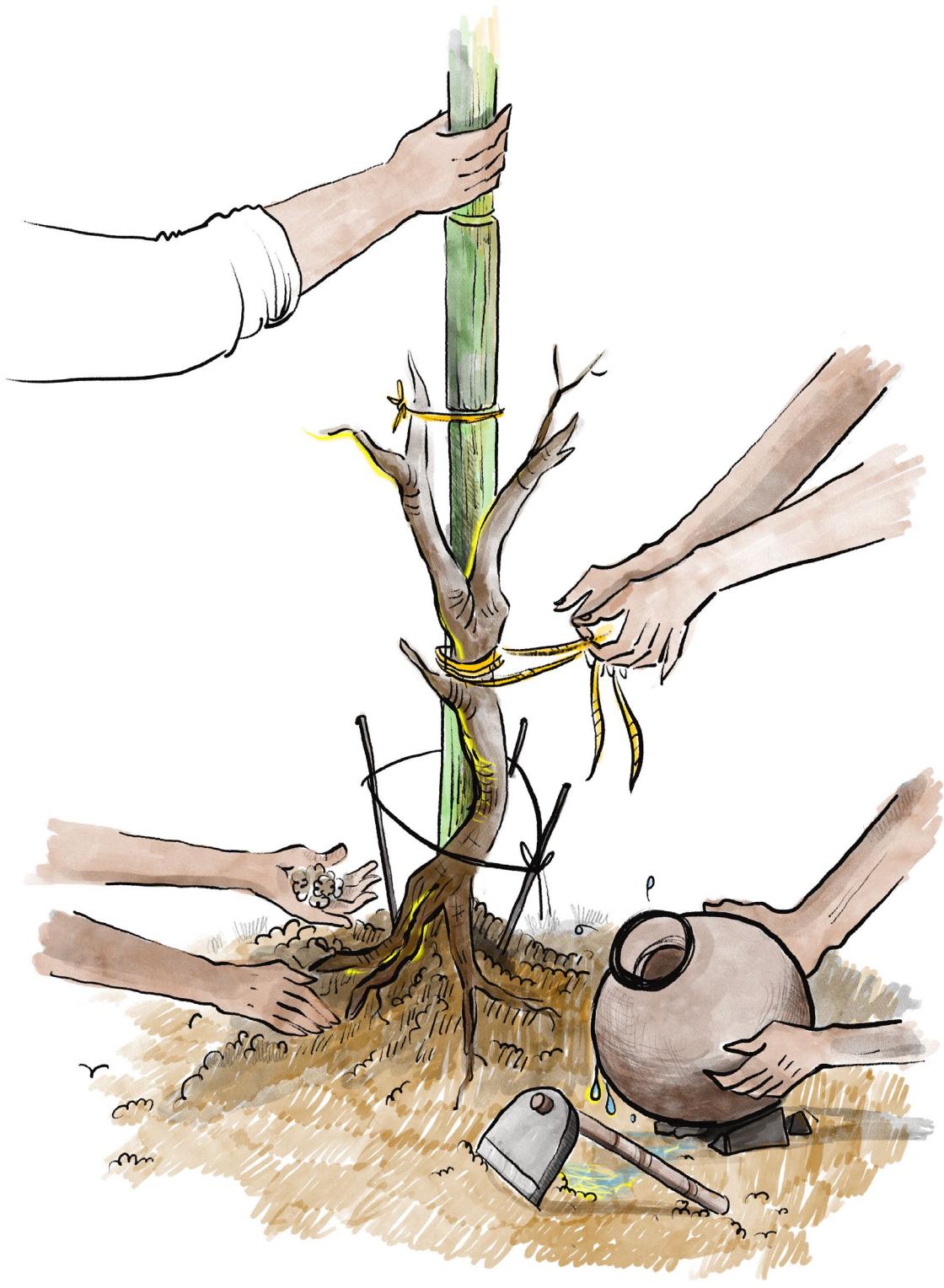
बिना किसी हिचकिचाहट के, भाई पानी में उतरे और शाखा को वापस ले आए। बड़ी सावधानी से, वे इसे अपने गाँव वापस ले आए।



वापस लौटने पर, गांव के लोग खुशी
से झूम उठे, और राहत के आँसू
के साथ, भाइयों को गले लगाया।
उन्होंने कृतज्ञता में पूजा-अर्चना की।

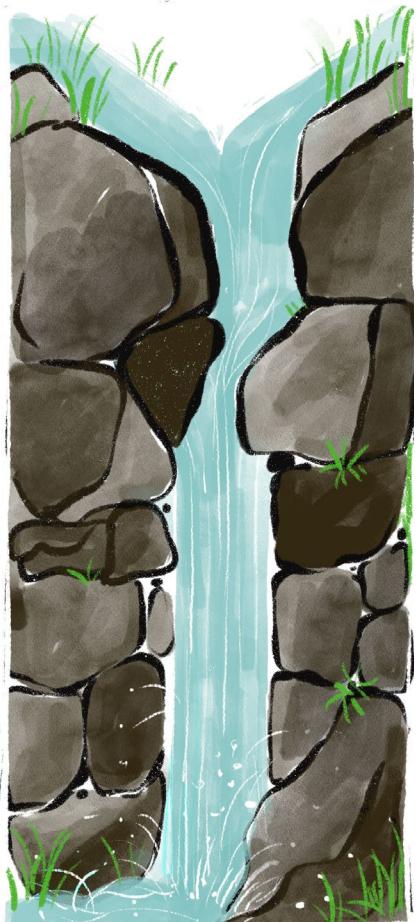
प्यार के एक खूबसूरत संकेत में, उनकी बहन ने भाइयों की कलाई के चारों ओर एक पवित्र धागा बांधा, उनकी सुरक्षा और अच्छे भाग्य के लिए प्रार्थना की, क्योंकि वे शाखा को पोषित करने और पेड़ को उसके सही स्थान पर बहाल करने के लिए तैयार थे।





साझा उद्देश्य से एकजुट होकर, पूरा गांव भाइयों को आंगन में पवित्र शाखा वापस लगाने में मदद करने के लिए इकट्ठा हुआ। साथ में, उन्होंने प्रकृति के देवी-देवताओं और अपने पूर्वजों से क्षमा के लिए प्रार्थना करते हुए पूजा की। उन्होंने अच्छी बारिश, भरपूर फसल और अपनी ज़मीन पर हरियाली की वापसी के लिए भगवान से प्रार्थना की।





उनकी प्रार्थनाओं की ईमानदारी से प्रेरित होकर, देवता अंततः प्रसन्न हुए, और उन्होंने गाँव पर दया की। जवाब में, प्रकृति एक बार फिर खिल उठी; काले बादल छा गए, और स्वर्ग से जीवन देने वाली बारिश होने लगी। धरती ने गहराई से पानी पिया, सुप्त बीजों को जगाया और जीवंत हरियाली को बढ़ावा दिया, उपजाऊ मिट्टी से ताजे फल और सब्जियाँ उग आईं।

हँसी और खुशी लौट आई, क्योंकि गाँव अपने पूर्व गैरव और गरिमा को वापस मिल गया। तब से, इस दिन को कर्मा उत्सव के रूप में मनाया जाता है। यह प्रकृति की प्रचुरता के प्रति कृतज्ञता, स्मरण और उत्सव का दिन बन गया, जिसने सभी को अपने आस-पास की दुनिया के प्रति सम्मान, सद्भाव और प्रेम के महत्व की याद दिलाई।



कर्मा उत्सव आमतौर पर सितंबर में भादो के मौसम में आता है। पहली एकादशी को, लोग कर्म वृक्ष की पूजा करते हैं, जिसे सभी वृक्षों में सबसे पवित्र माना जाता है और मुंडा समुदाय के भीतर एक प्यारे भाई के रूप में माना जाता है। महिलाएँ अपने भाइयों की कलाई के साथ-साथ कर्म वृक्ष की शाखाओं पर सुंदर धागे बाँधती हैं, सुरक्षा, आशीर्वाद और सौभाग्य के लिए प्रार्थना करती हैं। वे अपने परिवार और पूरे समुदाय के लिए अच्छे स्वास्थ्य, हरे-भरे जंगल, भरपूर बारिश और भरपूर फसल के लिए ईश्वर से प्रार्थना करती हैं। गाँव की महिलाएँ कई दिनों तक उपवास रखती हैं, जबकि अन्य उपासना करती हैं और बड़ी श्रद्धा के साथ पूजा करती हैं।



पूरा समुदाय जीवंत पारंपरिक पोशाक पहनकर उत्सव मनाने के लिए एक साथ आता है। पूरे दिन संगीत, ढोल की थाप, जोशीला नृत्य और एक भव्य सांप्रदायिक भोज होता है जो एक जुटता और कृतज्ञता की भावना को बढ़ावा देता है।





धात्री

पता:

प्लॉट नं. 10, लोटस पॉन्ड कॉलोनी,
मिलिटी डेयरी फार्म रोड,
वार्ड नं. 7 सिकंदराबाद, वेद विहार,
त्रिमुलघेरी, सिकंदराबाद,
तेलंगाना 500015.

हमसे संपर्क करें:

E-mail: dhaatri@gmail.com

सोशल मीडिया :

X: @DhaatriC

फेसबुक: fb.com/Dhaatricentre

इंस्टाग्राम: @dhaatriRC



www.dhaatri.com